एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 03 (मई-जून, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

छत्तीसगढ़ में सल्फी (बस्तर बीयर) - एक परिचय

(*सूरज कुमार[1] एवं दिव्यानी सोनी[2])
[1]कृषि प्रसंस्करण एवम् खाद्य अभियांत्रिकी विभाग, इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
[2]अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
*संवादी लेखक का ईमेल पता: skbhardwaj2104@gmail.com

सल्फी, ताड़ प्रजाति का पेड़ है और इसका वानस्पतिक नाम कॅरियोटा यूरेंस है। सल्फी का पेड़ बस्तर के लिए विशेष महत्व रखता है इस वृक्ष को गोंडी में 'गोरगा' एंव हल्बी में "सल्फी" कहा जाता है जो सल्फी बस्तर बियर के नाम से भी प्रचलित है। यह आदिवासियों में पारंपरिक रुप से एल्कोहलिक पेय पदार्थ के रूप में उपयोग किया जाता है।सल्फी पेड़ आकाश पानी के नाम से भी जाना जाता है। सल्फी का पेड़ लगभग 40 फीट तक ऊंचा होता है और 9 से 10 साल के बाद यह रस देना शुरू करता है। सल्फी के एक पेड़ को तैयार होने में करीब 15 से 20 साल तक का समय लगता है । एक पेड़ से 5 से 6 साल तक रस निकाला जा सकता है। ठंड के मौसम के साथ ही बस्तर की प्रसिद्ध देसी बीयर सल्फी का मौसम भी आ जाता है तथा सल्फी के शौकीन इसके सेवन के लिए गांव-गांव पहुंचने लगते हैं। इसके रस को हिलाने से बीयर की तरह झाग निकलता है।

- **स्वास्थ्य लाभ:** बस्तर के स्थानीय लोग बताते हैं कि सल्फी सिर्फ नशा मात्र ही नहीं बल्कि यह आयुर्वेदिक दवा का भी काम करता है। अगर इसे उचित मात्रा में लिया जाता है तो यह पेट से संबंधित सभी बीमारी दूर करता है। पेट रोग की बीमारी जैसे की पथरी समस्या से निजात मिलती है, ऐसे कम ही मामले आपको बस्तर में देखने को मिलेंगे जिसमें ग्रामीणों को पथरी की समस्या हो। सल्फी का रस पथरी की समस्या के लिए रामबाण है, यहीं वजह है कि ग्रामीण इसे स्वास्थ के लिए उपयोगी मानते हुए भी पीते हैं. खासकर गर्मी के दिनों में काफी लाभदायक होता है, यह एक सॉफ्ट कोल्डड्रिंक है जो शरीर को चुस्त रखने के साथ-साथ पेट की सभी बीमारी को दूर कर देता है।
- **एकत्रित करने का तरीका:** पुरुष पेड़ पर चढ़ते हैं और तने के दोनों ओर खुद को बैठते हैं, वे एक शाखा पर एक रस्सी की मदद से एक मिट्टी के बर्तन को लटकाते हैं और हासिया का उपयोग करके कटौती करते हैं ताकि रस मिट्टी के बर्तन में प्रवाहित हो सके। बीयर में एक चिकना, हल्का स्वाद होता है, यह थोड़ी नारियल पानी सा लगता है लेकिन उतना मीठा नहीं होता है, वास्तव में यह थोड़ा कड़वा होता है, अंत में तीखा होता है।

❖ **सल्फी की संग्रहण प्रक्रिया:** सल्फी का रस निकालने के लिये पेड के अग्रभाग को जिसे 'कली' कहते हैं को काट दिया जाता है। रस को एकत्रित करने के लिये रस्सी के सहारे नीचे एक घडा बाँध दिया जाता है जिसमे कली से बूंद बूंद टपक कर रस संग्रहित होता रहता है। सल्फी का रंग दूध की तरह सफेद होता है, थोडा पतला भी जैसे किसी ने दूध में पानी मिला दिया हो। जहां तक सल्फी किण्वन का संबंध है, हवा में खमीर शाखा से टपकना शुरू होते ही रस का किण्वन शुरू कर देता है। कंटेनर के आधार पर बचा हुआ खमीर भी प्रक्रिया में सहायता करता है। रस का संग्रह आमतौर पर सूर्योदय के समय और कभी-कभी सूर्यास्त के आसपास किया जाता है। लेकिन ध्यान रहे, अपनी सल्फी ताजा ही पिएं। यानी शाखा से इसे एकत्र करने के एक घंटे के भीतर। सल्फी का शेल्फ लाइफ ज्यादा नहीं होता। चूंकि प्राकृतिक किण्वन एक सतत प्रक्रिया है, यदि इसे अधिक मात्रा में किण्वित किया जाता है, तो यह आपको बहुत खराब पेट दे सकता है। पीने पर सल्फी थोडा खट्टापन लिये हुए मीठी सी होती है। लगभग इसी प्रक्रिया से ताडी भी प्राप्त की जाती है अर्थात ताड़ के पेड़ से निकाले गये दूध से बनी मदिरा को ताड़ी कहते हैं। ताजी सल्फी अथवा ताड़ी में नशा नहीं होता और यह सुबह सुबह एक ऊर्जा दायक पेय के रूप में पी जाती है। जैसे जैसे दिन चढता है तथा रस में फरमंटेशन की प्रक्रिया जोर पकडने लगती है, रस कडुवा होने लगता है साथ ही अधिक नशीला भी होने लगती है ।

❖ **सल्फी और ताड़ी में विभिन्नता:** सल्फी और ताड़ी में समानता के साथ- साथ विभिन्नता भी है । क्षेत्रवार यदि सल्फी के पेड की तलाश की जाये तो इसका वितरण उत्तर तथा मध्य बस्तर में अधिक हैं जबकि दक्षिण बस्तर में ये कम पाये जाते हैं। दक्षिण बस्तर में ताड़ के वृक्ष ज्यादा हैं और वहाँ के लोग सल्फी की अपेक्षा ताड़ी पीने के अधिक आदी हैं। हालांकि ताडी का वृक्ष सल्फी के वंश का ही है तथापि ताडी सल्फी से कहीं अधिक मादक होती है।

❖ **बस्तर में आमदनी का स्रोत:** यह पेड़ साल में एक से डेढ़ लाख रुपए की आमदनी देती है और आदिवासी इसे शादी-विवाह के साथ-साथ किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में बड़े शौक से सेवन करते हैं । इस सल्फी की रस से हल्का सा नशा तो जरूर होता है, लेकिन यह औषधीय गुणों से भरपूर है ।. जानकार बताते है कि शहरी इलाके के साथ-साथ ग्रामीण अंचलों में सल्फी के पेड़ ग्रामीणों के घरों में देखने को मिलते हैं, अब यह पेड़ तेजी से सूख रहे हैं और इस वृक्ष के सूखने का कारण किसी को भी पता नहीं चल सका है। हालांकि सल्फी को और स्वथ्वर्धक बनाने के साथ-साथ इसकी शेल्फ लाइफ बढाने तथा बाज़ार में लाने के लिए शोध करने की आवश्यकता है । यह अभी बस्तर तक ही सिमित है ।